ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 152-154
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-9, No.-II, Issues-10 YEAR- Dec -2018

मनोविश्लेषण और सृजन प्रक्रिया

डॉ0 सन्तोष कुमार सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर– हिन्दी विभाग, श्री सुदृष्टि बाबा स्नातकोत्तर महाविद्यालय सुदिष्टपुरी–रानीगंज, बलिया (उ0प्र0), भारत

Received- 20.11.2018, Revised- 23.11.2018, Accepted - 26.12.2018 E-mail: aaryvrat2013@gmail.com

सारांश : ***मनोविश्लेषण का उल्लेख मनोविज्ञान की एक महत्वपूर्ण शाखा के रूप में किया जाता है। मनोविश्लेषण के अंतर्गत अवचेतन मन के अध्ययन से संबंधित सिद्धांत और चिकित्सकीय प्रविधियाँ सम्मिलित की जाती हैं, जिनके द्वारा मनुष्य के मन से संबंधित बीमारियों का उपचार किया जाता है। एक पृथक ज्ञानानुशासन के रूप में इसे स्थापित करने का श्रेय सिगमंड फ्रॉयड को दिया जाता है। मनोविश्लेषण शास्त्र ने मनुष्य की चित्तवृत्ति के अध्ययन को बहुत दूर तक प्रभावित किया है। साहित्य के अनुशीलन और सृजन को भी इसने प्रेरित व प्रभावित किया है। निश्चय ही फ्रॉयड का इसमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान है, लेकिन उनके शिष्य एडलर और युंग ने भी इसके विकास में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया । एडलर और युंग कुछ संदर्भों में फ्रायड से असहमत थे , तो कुछ प्रसंगों में उन्होंने फ्रायड के सिद्धांतों को आगे विकसित किया। मनोविश्लेषण की आधारभूत अवधारणाओं को समझने के लिए फ्रॉयड के सिद्धांतों का अध्ययन आवश्यक है।***

कुंजीभूत शब्द–मनोविज्ञान, शाखा, मनोविश्लेषण, अवचेतन, अध्ययन, संबंधित, चिकित्सकीय, प्रविधियाँ ।

फ्रॉयड के मनोविश्लेषण की मूलभूत निष्पत्तियों के अनुसार मनुष्य का विकास विरासत में मिली विशेषताओं द्वारा नहीं, बल्कि बचपन की भूली बिसरी घटनाओं से ज्यादा निर्धारित होता है। मनुष्य का व्यवहार, उसकी अनुभूति और विचारधारा, उसके अवचेतन में उपस्थित मूल वृत्तियों के संचालन द्वारा निर्धारित होती है। जब इन प्रक्रियाओं को चेतना के स्तर पर लाया जाता है, तो वे रक्षात्मक प्रतिक्रियायों के रूप में प्रतिरोध करती हैं। चेतन और अवचेतन के बीच इस द्वंद्व का परिणाम कई तरह की मानसिक वि.तियों के रूप में निकलता है। जैसे – विक्षिप्तता, न्यूरोसिस, उद्विग्नता और डिप्रेशन आदि। सपनों में, आदतों में और जुबान की फिसलन जैसे अनजाने में किए गए कार्यों में अवचेतन के तत्वों का प्रभाव देखा जा सकता है। चिकित्सकीय हस्तक्षेप के द्वारा इन तत्वों को चेतन मानस में लाकर अवचेतन के प्रभाव से मुक्ति पाई जा सकती है। फ्रॉयड का मानना था कि मनुष्य जब अपनी इच्छाओं, आवश्यताओं और कामनाओं को किसी कारणवश पूरा नहीं कर पाता है , तो वह उन्हें अपने अवचेतन में दबा देता है और इससे उस में अनेक प्रकार की कुंठा , हीन भावना और अपराध बोध उत्पन्न हो जाते हैं । फ्रॉयड ने मन को तीन भागों में विभाजित किया है – ईड (काम–तत्व), इगो (अहम) और सुपर इगो (पराअहम)। बाल्यकाल में मनुष्य में केवल ईड विकसित होता है और उसे दबाने की आवश्यकता नहीं होती। लेकिन जैसे–जैसे व्यक्ति बड़ा होता जाता है, सामाजिक और नैतिक दबाओं के कारण उसमें इगो और सुपर इगो का विकास होता है। फ्रॉयड ने स्वप्न को भी समझने का प्रयास किया था। वस्तुतः फ्रॉयड ने मानसिक रोग, स्वप्न, दिवास्वप्न कला व साहित्य आदि को मनुष्य की अतृप्त और दमित काम वासनाओं से उत्पन्न माना है। उनके अनुसार स्वप्न एक ऐसी इच्छापूर्ति है, जिसका चेतन मन द्वारा दमन किया गया होता है। जो दमित एवं कुंठित इच्छाएँ अवचेतन में निष्क्रिय पड़ी रहती हैं , मनुष्य की सुसुप्तावस्था में वे चुपचाप एक–एक करके बाहर निकलने का प्रयास करती हैं। कभी–कभी तो वे बिल्कुल नग्न रूप में अनावृत्त होती हैं, कभी अर्धनग्न रूप में और बहुधा वेश बदलकर निकलती हैं। इसीलिए स्वप्न प्रायः प्रतीकात्मक होते हैं। इसी प्रकार साहित्य और कला के संदर्भ में भी फ्रॉयड ने दमित और कुंठित कामवृत्तियों की मौजूदगी स्वीकार की है। उनके अनुसार ये वृत्तियाँ विविध प्रकार की बाह्य वर्जनाओं के कारण कलाकार के अवचेतन मन में दबी पड़ी रहती हैं और अवसर आने पर उसकी कला के माध्यम से अपने निकास का मार्ग खोजती हैं व्यक्ति के जीवन की अधिकांश कार्यप्रेरणाओं का उद्गम यही अवचेतन या अचेतन मन होता है। समस्त कला अवचेतन या अचेतन में दबी इन्हीं कुंठित काम वृत्तियों का प्रस्फुटन होती है। इन दमित और कुंठित काम इच्छाओं की स्थिति सभी मनुष्यों में होती है, लेकिन चूँकि कलाकार के पास कला का माध्यम होता है, अतः वह अपनी इन दमित वृत्तियों को अपनी कला के माध्यम से उदात्त रूप में व्यक्त करने का प्रयत्न करता है। फ्रॉयड ने अपनी इस मान्यता का , कुछ कला.तियों का विश्लेषण करते

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-9, No.-II, Issues-10 YEAR- Dec -2018

हुए विश्वसनीय स्तर पर प्रमाणित करने का भी प्रयास किया है। फ्रॉयड के मनोविश्लेषण संबंधी इन सिद्धांतों ने व्यापक प्रभाव पैदा किया। किन्तु उनके जीवन काल में ही उनकी मान्यताओं को उनके ही शिष्यों द्वारा चुनौती दिया जाने लगा। फ्रॉयड ने मन के विभिन्न परतों और सपनों का जो विश्लेषण किया, उसके महत्व से इनकार नहीं किया जा सकता, लेकिन उन्होंने काम भावना को अपने सिद्धांतों में जो केंद्रीय महत्व प्रदान किया, उसे बाद के मनोविश्लेषणवादियो ने यथावत् स्वीकार नहीं किया। इस सन्दर्भ में उनसे मतभेद रखने वालों में एडलर और युंग प्रमुख थे, जिन्होंने स्वयं फ्रॉयड के साथ कार्य किया था। फ्रॉयड की तरह इन दोनों ने भी कला और साहित्य को संदर्भित करते हुए मनोविश्लेषणवाद पर विचार किया है।

अल्फ्रेड एडलर फ्रायड के शिष्य थे, लेकिन बाद में फ्रॉयड से मतभेदों के कारण उन्होंने मनोविश्लेषण से संबंधित भिन्न वैचारिकी प्रस्तुत की। फ्रॉयड जीवन की प्रेरणाशक्ति काम भावना को मानते हैं, जबकि एडलर अधिकार भावना को केंद्रीय महत्व देते हैं। उनके अनुसार मनुष्य के जीवन में तीन चीजों का सर्वाधिक महत्व होता है – समाज , प्रेम और कार्य। बाल्यकाल से ही व्यक्ति को इन्हीं तीन चीजों का समायोजन करना पड़ता है। मनुष्य संसार में अकेला आता है और बचपन से ही उसे कदम–कदम पर दूसरों की सहायता लेनी पड़ती है। उसे कदम– कदम पर असहायता का अनुभव होता है। दूसरों के अनुचित व्यवहार से, विपरीत परिस्थितियों से और शारीरिक दुर्बलता से असहायता की भावना का प्रभाव मनुष्य पर कई रूपों में दिखाई देता है। वह विषम परिस्थितियों पर विजय प्राप्त करने की कोशिश करता है या आत्मकेंद्रित हो जाता है अथवा पलायनवादी बनकर निष्क्रिय हो जाता है तथा समझौता परस्त बनता जाता है। एडलर का मानना है कि मनुष्य के विकास में सबसे प्रमुख भूमिका समाज की होती है यह संभव ही नहीं है कि मनुष्य समाज से निरपेक्ष होकर जीवन व्यतीत करे। उसके जीवन से जुड़ी सभी तरह की इच्छाएँ, प्रेरणाएँ व समस्याएँ, समाज सापेक्ष होती हैं। मनुष्य अपनी जीवन पद्धति का विकास अहम् भावना और समुदाय भावना दोनों से करता है। इन दोनों में संतुलन और सामंजस्य हो , तो जीवन स्वाभाविक और सहज ढंग से चलता है, अन्यथा कई तरह की मानसिक बीमारियाँ उत्पन्न होने की संभावना प्रकट होने लगती है। एडलर मानव के चरित्र निर्माण में अनेक कारकों की महत्वपूर्ण भूमिका मानते हैं, जिनमें प्रमुख हैं – शारीरिक गठन, परिवार, सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियाँ, जीवन का लक्ष्य और उसे प्राप्त करने के साधन । इन सभी से मिलकर मनुष्य के चरित्र का निर्माण होता है और जीवन में सफलता तथा असफलता भी काफी सीमा तक इन्हीं से निर्धारित होती है। एडलर जीवन में सफलता के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा हीनता ग्रंथि को मानते हैं। उनके अनुसार इस हीनता ग्रंथि से मुक्त हुए बिना मनुष्य जीवन में आगे बढ़ने के लिए संघर्ष नहीं कर सकता और न ही सफलता उपलब्ध कर सकता है। इसी हीनताग्रंथि को वे कला का मूल मानते हैं। उनका कहना है कि, कलाकार सामाजिक दृष्टि से एक निर्बल तथा अनुपयोगी प्राणी होता है। अपनी सामाजिक अनुपयोगिता की यह अनुभूति उसे सर्वदा ही पीड़ित किया करती है। इसके फलस्वरूप ही वह कला सृजन में प्रवृत्त होता है और इस प्रकार समाज में अपनी उपयोगिता को प्रमाणित करने का प्रयास करता है। कला इस प्रकार एक क्षतिपूर्ति है, जिसका संबंध व्यक्ति के हीनता भाव से है।

फ्रॉयड की तरह कार्ल युंग भी चेतन मन की तुलना में अवचेतन मन को अधिक महत्वपूर्ण मानते हैं, लेकिन जहाँ फ्रॉयड अवचेतन मन को दमित कामेच्छाओं से संयुक्त करते हैं, वहीं युंग का मानना है कि इनमें वे तत्व भी विद्यमान रहते हैं, जो व्यक्ति के निजी जीवन का हिस्सा नहीं बनते। वास्तव में वे हमारी प्राचीन ऐतिहासिक अनुभव राशि का भाग होते हैं। इन्हें युंग ने आनुवंशिक या प्रजातीय स्मृति कहा है। उनका मानना है कि अवचेतन मन के दो हिस्से होते हैं – वैयक्तिक अवचेतन मन और सामूहिक अवचेतन मन। सामूहिक अवचेतन मन वैयक्तिक अवचेतन मन की तुलना में ज्यादा महत्वपूर्ण होता है। व्यक्ति के सामूहिक अवचेतन में ही आदिम प्रजातीय मिथकीय स्मृतियाँ अवस्थित रहती हैं। इसकी प्रकृति अपने मूल रूप में विश्वव्यापी, सामूहिक पुरातन और निर्वैयक्तिक हुआ करती है। युंग कला सृजन को वैयक्तिक और सामूहिक अवचेतन मन दोनों के साथ जोड़कर देखते हैं। वे कला के मूल में एक प्रकार का द्वंद्व स्वीकार करते हैं, जो एक स्तर पर उसे अपनी वैयक्तिक आकांक्षाओं की तुष्टि के लिए उत्प्रेरित करता है और दूसरे स्तर पर उसे समस्त मानवता की आकांक्षाओं की पूर्ति हेतु सृजन के लिए प्रेरित करता है। इस द्वंद्व के फलस्वरूप वह जो कुछ रचता है , उसमें प्रायः उसकी वैयक्तिक आकांक्षाएँ उपेक्षित रह जाती हैं। इसका परिणाम यह होता है कि, व्यक्ति के रूप में वह सदा ही पीड़ित और दुःखी बना रहता है। युंग कला के संदर्भ में सामूहिक अवचेतन की बात करते हैं, जिसका संबंध सभी से है। यह सामूहिक अवचेतन ही कलाकार को एक ऐसी उत्कृष्ट सृजन प्रेरणा से परिचालित करता है, जो रचनाकार व्यक्ति के मन की आकांक्षाओं का तो प्रतिरूप होता ही है, साथ ही मानव मात्र की अभिलाषाओं को तृप्ति प्रदान करता है।

मनोविश्लेषणवाद के इन तीनों प्रमुख सिद्धांत कारों ने साहित्य और कला पर इसके प्रभाव की विवेचना भी की है। स्वयं फ्रॉयड ने 'लियोनार्दो द विंची' की कलाकृतियों और

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-9, No.-II, Issues-10 YEAR- Dec -2018

दोस्तोव्स्की की रचनाओं के विश्लेषण द्वारा मनोविश्लेषण संबंधी अपनी धारणाओं को प्रामाणिकत धरातल पर पुष्ट करने का प्रयास किया है। फ्रॉयड के इन प्रयत्नों का प्रभाव तत्कालीन कलाकारों और साहित्यकारों के सृजन पर शीघ्र ही दृष्टिगत होने लगा था। मनोविश्लेषण के प्रभाव का परिणाम यह भी हुआ कि, लेखकों ने अपनी रचनाओं में वस्तु जगत की जटिलताओं का चित्रण करने तक ही अपने को सीमित न रखते हुए , मनुष्य के मन की अतल गहराइयों में झाँकने का भी प्रयास किया और परिस्थितियों के सापेक्ष व्यक्ति के अंतस में चलने वाले द्वंद्व को चित्रित करने पर भी विशेष बल देना आरम्भ कर दिया। इसके साथ ही मनुष्य के यौन जीवन के उन वर्जित क्षेत्रों के चित्रण की ओर भी साहित्य सर्जक व कलाकार उन्मुख हुए, जिन्हें पहले नैतिकतावादी कलाकार अपनी पवित्रतावादी मनोरचना के प्रभाव के कारण चित्रित करने से बचते थे। कलाकार के सृजन प्रक्रिया की भी मनोविश्लेषणवादी व्याख्याएँ की गईं और माना जाने लगा कि रचना प्रक्रिया के अननंतर कवि या कलाकार का केवल चेतन मन ही सक्रिय नहीं रहता बल्कि , अवचेतन मन भी क्रियाशील रहता है। ऐसे में वह बहुत कुछ ऐसा भी रच डालता है, जो पहले से उसकी कार्ययोजना में नहीं होता। वस्तुतः वह उसके अवचेतन मन में होता है , जो सृजन की प्रक्रिया में उसके चेतन मन में आकर उसकी रचना का अंग बनता है। '

मुक्तिबोध' ने रचना प्रक्रिया के संदर्भ में जिस फैंटेसी का उल्लेख किया है, उसका संबंध कुछ हद तक अवचेतन मन से भी है। इसी प्रकार कथा साहित्य के अन्तर्गत चरित्र चित्रण के परिप्रेक्ष्य में मन के अन्तर्द्वंद्वों को विशेष महत्ता दी जाने लगी और चेतना के उन्मुक्त प्रवाह द्वारा मन की जटिलताओं को समझने का प्रयास किया जाने लगा। मनोविश्लेषण के प्रभाव का रेखांकन हिंदी साहित्य में भी तीसरे दशक से होने लगा था। प्रेमचंद के बाद की पीढ़ी के लेखकों में जैनेंद्र, अज्ञेय व इलाचंद्र जोशी के कथा साहित्य को मनोवैज्ञानिक धारा का लेखन कहा गया। यह मान लिया गया कि इनके लेखन पर फ्रॉयड के मनोविश्लेषण का प्रभाव है। इनकी कई कृतियों जैसे जैनेंद्र के उपन्यास' सुनीता' और अज्ञेय के उपन्यास' शेखर : एक जीवनी' की विवेचना मनोविश्लेषणवादी सैद्धांतिकी के आधार पर की गई।' जैनेंद्र के उपन्यासों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन' नाम से डॉ व देवराज ने जो शोधकार्य किया, उसका दूरगामी प्रभाव हिंदी आलोचना और अनुसंधान दोनों पर पड़ा। इसी प्रकार प्रख्यात् समालोचक डॉ व नगेंद्र ने छायावाद और अन्य काव्य प्रवृत्तियों की विवेचना में मनोवैज्ञानिक पद्धति का उपयोग किया।

इस प्रकार हिन्दी साहित्य के अन्तर्गत जहाँ भी लेखकों व कवियों ने मनुष्य के मन के उहापोह और अंतर्द्वंद का रेखांकन किया है, वहाँ यह माना गया है कि, यह फ्रॉयड के प्रभाव का ही परिणाम है। इसी तरह जहाँ भी व्यक्ति के यौन संबंधों का परंपरा से भिन्न वर्णन किया गया, वहाँ भी उसे फ्रॉयड के प्रभाव का फल मान लिया गया। वस्तुतः मनोविश्लेषण के सामान्य प्रभाव की .ष्टि से किसी साहित्य रचना का विश्लेषण करने में कोई त्रुटि नहीं है, यदि इससे विवेच्य साहित्य या साहित्यिक प्रवृत्ति को समझने में सहायता मिल सके।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. भारतीय साहित्य के निर्माता जैनेंद्र कुमार – गोविन्द मिश्र
2. जैनेन्द्र के उपन्यासों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन – डॉ0 देवराज
3. शेखर : एक जीवनी – अज्ञेय
4. सुनीता – जैनेंद्र कुमार
5. अज्ञेय के नारी पात्रों में मनोवैज्ञानिक चित्रण डॉ0 सुनीता कुमारी

*****